संगीत भूषण (प्रथम खण्ड)
Sangeet Bhushan Part-I (First Year)
गायन (VOCAL)
ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक : १५०

शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) परिभाषा-संगीत, भारतीय संगीत की दो मुख्य पद्धतियाँ, नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, थाट, लय, ताल, जाति, सम, ताली, खाली, आवर्तन, मात्रा, अलंकार और रागों का परिचय।

(२) शुद्ध तथा विकृत स्वरों का ज्ञान।

(३) इस वर्ष के निर्धारित राग समूहों का परिचय जानना आवश्यक हैं।

(४) भातखंडे और पंडित विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धति का ज्ञान।

(५) गीतों के प्रकार-सरगम गीत तथा लक्षण गीत।

(६) इस वर्ष के लिये निर्धारित तालों के ठेके ताली, खाली तथा विभाग सहित विलंबित और दुगुन में लिखने का अभ्यास।

(७) दिये गये स्वर समूहों को देखकर राग पहचानना।

क्रियात्मक (Practical)

(१) शुद्ध तथा विकृत एवं कोमल स्वरों में सरल अलंकार गाने का अभ्यास।

(२) निम्नलिखित राग समूहों में छोटा ख्याल दो आलाप एवं चार तानों सहित (ध्रुपद गायन परीक्षार्थियों को ठाह तथा दुगुन लयकारी सहित ध्रुपद गायन) किन्हीं दो रागों में साधारण आलाप गाने का अभ्यास-निध ीरित राग-अल्हैया बिलावल, यमन कल्याण, भूपाली, खमाज, भैरव, बिहाग तथा आसावरी।

Scanned by CamScanner

(३) ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों को सूलताल में निबद्ध एक गीत और एक सरगम गीत जानना आवश्यक हैं।

(४) इस वर्ष के लिये निर्धारित राग समूह में से किसी एक राग में लक्षण गीत और एक सरगम गीत जानना आवश्यक है।

(५) स्वर विस्तार सुनकर राग पहचानने की क्षमता।

(६) निम्नलिखित ताल समूहों को ताली खाली सहित ठाह तथा दुगुन लय में बोलने का अभ्यास। ख्याल गायन के लिए-दादरा, कहरवा, त्रिताल तथा झपताल। ध्रुपद गायन के लिये-दादरा, कहरवा, चौताल तथा सूलताल।

(७) राष्ट्रीय गान : जन-गण-मन।

(८) कहरवा और दादरा तालों में गीत।

टिप्पणी - पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner

संगीत भूषण (द्वितीय खण्ड)
Sangeet Bhushan Part-II (Second Year)
गायन (VOCAL)
ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक : १५०　　　　　　　　　　शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) निम्नलिखित शब्दों का पारिभाषिक ज्ञान-
नाद (आहत-अनाहत) तथा नाद की विशेषता, श्रुति, वक्र स्वर, थाटों के प्रकार, वर्ण (स्थायी, आरोही, अवरोही, व संचारी) वादी, सम्वादी, अनुवादी, विवादी, पूर्वरांग, उत्तररांग, ग्रह, अंश, न्यास, राग, आलाप, गमक, तान मींड, र्स्पषस्वर आश्रयराग, घसीट, जनक थाट और जन्य राग, ताल, ल़य, लय के प्रकार तालों को भातखण्डे एवं विष्णुदिगम्बर ताल पद्धति में लिपिबद्ध करने का ज्ञान ।

(२) निम्नलिखित के पारस्परिक विभेदों का अध्ययन-

थाट- राग	श्रुति - स्वर
तान- आलाप	नाद - श्रुति

(३) विष्णु दिगम्बर तथा भातखंडे स्वर लिपि पद्धति का ज्ञान।

(४) गीतों के प्रकार- ध्रुपद, ख्याल, तराना, सरगम गीत, लक्षणगीत।

(५) इस वर्ष के लिए निर्धारित राग समूहों का पूर्ण परिचय।

(६) दिये गये स्वर समूहों को देखकर रागों को पहचानना एवं सम प्रकृति रागों के मध्य समानता तथा विभिन्नता का ज्ञान।

(७) आधुनिक मतानुसार 22 श्रुतियों को सात स्वरों में विभाजित करने की विधि एवं नियम।

(८) भातखंडे पद्धति में तान, आलाप सहित ख्याल (ध्रुपद गायन परीक्षार्थियों के लिए विभिन्न लयकारियां आलाप आदि) तथा पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न गीत प्रकारों को स्वर लिपि में लिखने का अभ्यास।

Scanned by CamScanner

(९) इस वर्ष के लिये निर्धारित ताल समूहों को ठाह, दुगुन तथा चौगुन में सम, ताली, खाली सहित ताल लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

(१०) जीवनी तथा संगीत क्षेत्र में योगदान-
मियां तानसेन, पंडित भातखंडे तथा अमीर खुसरों।

क्रियात्मक (Practical)

(१) शुद्ध तथा विकृत स्वरों में कठिन अलंकार गाने का अभ्यास।

(२) निम्नलिखित राग समूहों में आलाप एवं तानो सहित छोटा ख्याल, ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये ठाह, दुगुन तथा चौगुन लयकारी के साथ ध्रुपद गायन जानना आवश्यक है।
निर्धारित राग- भैरवी, काफी, देस, वृन्दावनी सारंग, दुर्गा, बागेश्री, भीमपलासी, पटदीप तथा हमीर।

(३) पाठ्यक्रम में से किन्ही दो रागों में एक ताल में बड़ा ख्याल तथा(ध्रुपद के परीक्षार्थियों के लिए ध्रुपद चारताल या सूलताल) में निबद्ध होना चाहिए।

(४) प्रथम तथा द्वितीय वर्ष के लिये निर्धारित रागों में से किसी भी एक राग में एक ध्रुपद (विलम्बित तथा दुगुन लयकारी सहित गानें की क्षमता)

(५) आलाप सुनकर राग पहचानने की क्षमता।

(६) निम्नलिखित ताल समूहों के ठेके के बोल दुगुन तथा चौगुन लय में हाथ पर ताली, खाली दिखानें का अभ्यास।
त्रिताल, एकताल, चारताल, तीवरा, सूलताल और झपताल।

(७) तानपुरा अथवा हारमोनियम पर राग के उपयोगी स्वर दबाकर गाने का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner

संगीत भूषण पूर्ण

Sangeet Bhushan Final (Third Year)

गायन (VOCAL)

ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक : १५० शास्त्र - ५०, क्रियात्मक - १००

शास्त्र (Theory)

(१) शुद्ध तथा विकृत स्वर समूहों द्वारा 72 थाटों की उत्पति का विवरण तथा व्यंकट मुखी द्वारा एक थाट से 484 रागों के उत्पन्न होने का विवरण।

(२) पूर्व राग, उत्तर राग, संधि प्रकाश राग, आविर्भाव - तिरोभाव, अल्पत्व, बहुत्व, तान के प्रकार, गमक के प्रकारों के विषय में विस्तृत विवरण।

(३) गायक के गुण तथा दोष।

(४) तानपुरा तथा तबले का इतिहास एवं उनको स्वर में मिलाने की विधि।

(५) गीतों के प्रकार - धमार तथा तराना ।

(६) पाठ्यक्रम में निर्धारित राग समूहों का पूर्ण तथा तुलनात्मक अध्ययन।

(७) ध्रुपद तथा धमार की स्वरलिपि ठाह, दुगुन,तिगुन तथा चौगुन लयकारी में लिखनें की क्षमता।

(८) संगीत से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर निबन्ध -

- (क) रेडियो तथा संगीत।
- (ख) शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत।
- (ग) मानव जीवन में संगीत का महत्व।
- (घ) संगीत में ताल तथा लय का महत्व।
- (ङ) संगीत ऐच्छिक विषय।

Scanned by CamScanner

(९) लिखित स्वर समूहों को देखकर रागों की पहचान।

(१०) पाठ्यक्रम में निर्धारित ताल समूहों को ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में लिखने की क्षमता।

(११) भारतीय संगीत का इतिहास।

(१२) निम्नलिखित संगीतकारों का जीवन परिचय व योगदान-
स्वामी हरिदास, विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, अमीर खुसरो और पंडित विष्णु नारायण भातखंडे।

क्रियात्मक (Practical)

(१) पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त रागों में छोटा ख्याल आलाप एवं तानों के विभिन्न प्रकारों सहित (ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए विलम्बित, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी सहित ध्रुपद जानना आवश्क है)
निर्धारित राग- तिलंग, मालकौंस, पूर्वी, कालिंगड़ा, जयजयवन्ती, केदार, कामोद, हमीर, देशकार, पीलू,पटदीप और मारवा ।

(२) ऊपर दिये गये रागों में किन्हीं चार रागों में विलम्बित ख्याल, झूमरा, त्रिताल तथा एकताल में निबद्ध होने चाहिए।

(३) इस वर्ष के लिये निर्धारित राग में से किसी भी एक राग में दो ध्रुपद एक तराना तथा एक धमार जानना आवश्यक है। (ध्रुपद, धमार, ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में होना चाहिए)

(४) ध्रुपद गायन परीक्षार्थियों को ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी के साथ दो धमार एवं एक तराना जानना आवश्यक है।

(५) रागों में गाकर समानता विभिन्नता प्रदर्शन करने का अभ्यास।

(६) आलाप सुनकर रागों की पहचान।

(७) निम्नलिखित तालों के ठेके को ताली, खाली, ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारियों में बोलने का अभ्यास-
तिलवाड़ा, झूमरा, धमार, सूलताल और रूपक।

(८) तानपुरा के साथ गाने का अभ्यास अनिवार्य है।

टिप्पणी- पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner